# बेन्जी

# और

# भों-भों करने वाली चिड़िया



मार्गरेट ग्राहम

# बेन्जी
# और
# भों-भों करने वाली चिड़िया



मार्गरेट ग्राहम



बेन्जी एक भूरे रंग का कुत्ता था जिसके कान लंबे और पूंछ छोटी थी. वो अपने परिवार के हर शख्स से प्यार करता था - मां, पिता, लिंडा और जिमी - और वे सभी उससे प्यार करते थे. जब तक उसने ये शब्द नहीं सुने तब तक बेन्जी एक खुश कुत्ता था.

"कल आंटी सारा आ रही हैं, और वो टिली को अपने साथ ला रही हैं."

टिली, आंटी सारा का तोता था. जबसे टिली वहां आया, तब से बेन्जी का परिवार हमेशा टिली की ही बढ़ाई करता रहा और किसी ने बेन्जी पर ध्यान नहीं दिया. उससे बेन्जी को ईर्ष्या होने लगी.



आंटी सारा ने आते ही कहा. "आओ, टिली, उन्हें अपनी नई चाल दिखाओ.

बोलो "भौं!-भौं!, मेरे प्रिय."



"भौं!-भौं! भौं!-भौं!" टिली चिल्लाया.

"वाह," जिमी ने कहा, "टिली, बेन्जी से भी बेहतर भौंक सकता है."

बेन्जी उसे बर्दाश्त नहीं कर सका. वो बाहर पिछवाड़े में चला गया.



बेन्जी ने दोबारा घर में तब तक न आने का फैसला किया जब तक वो भयानक तोता चला नहीं जाता.

बेन्जी भी उसे सुन सकता था:

"भौं!-भौं! भौं!-भौं!"

टिली इतनी देर तक और इतनी जोर से भौंकी कि आस-पड़ोस के सारे कुत्ते दौड़े हुए आए.

जल्द ही पिछवाड़ा भौंकने वाले कुत्तों से भर गया.

उन्होंने इतना शोर मचाया कि बेन्जी के कान दुखने लगे.

पापा ने दरवाजे पर आकर आवाज लगाई. "यहां से चले जाओ!"



"भगवान के लिए, चुप रहो, टिली!" आंटी सारा ने कहा.

"मुझे नहीं पता कि उस पक्षी के दिमाग में क्या घुस गया है. उसने पूरे वसंत यही किया है."

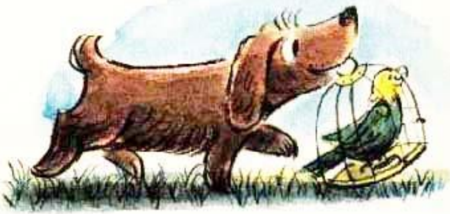
"लिंडा प्रिय," मां ने कहा, "टिली को आंटी सारा के कमरे में ही रख दो ताकि हमें दोपहर के भोजन के समय कुछ शांति और सुकून मिल सके."



बेन्जी अभी भी बाहर था, लेकिन पहले से कहीं अधिक ईर्ष्यालु.

अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया. जब परिवार दोपहर के भोजन के समय बातें कर रहा था, तब बेन्जी चुपचाप घर में घुसा, फिर भोजन कक्ष से होते हुए, वो आंटी सारा के कमरे में पहुंचा.

टिली सो रही थी, क्योंकि वो भौंकने से थक गई थी.



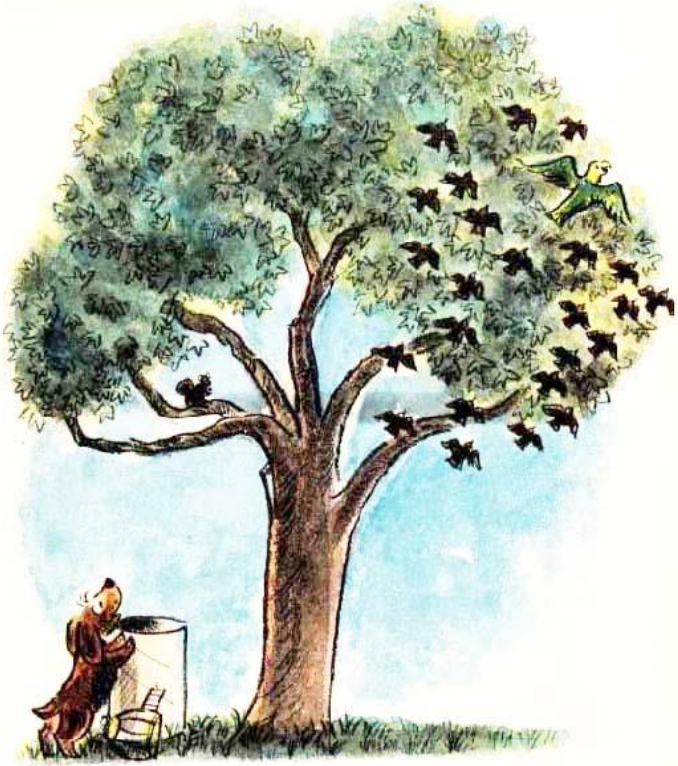
बेन्जी ने सावधानी से टिली का पिंजरा उठाया और उसे बाहर पिछवाड़े में ले गया.



वो जब पिंजरे को कूड़ेदान के ऊपर उठा रहा था तभी पिंजरे के दरवाज़े का हैंडल किनार में फंस गया.

उससे दरवाज़ा खुला और टिली भाग निकली!

वो उड़कर बड़े मेपल के पेड़ की ओर उड़ी और एक



गौरियों के झुंड में जाकर मिल गई.

फिर एक झटके में टिली और गौरैए वहां से उड़ गए. बेन्जी स्तब्ध होकर वहीं खड़ा रहा. फिर एकदम से उसे ख़ुशी महसूस हुई. क्योंकि टिली चली गई थी!

जल्दी से उसने पिंजरे को कूड़ेदान में छिपा दिया और फिर घर के अंदर भागा.

दोपहर के भोजन के बाद सारा आंटी अपने कमरे में गईं.

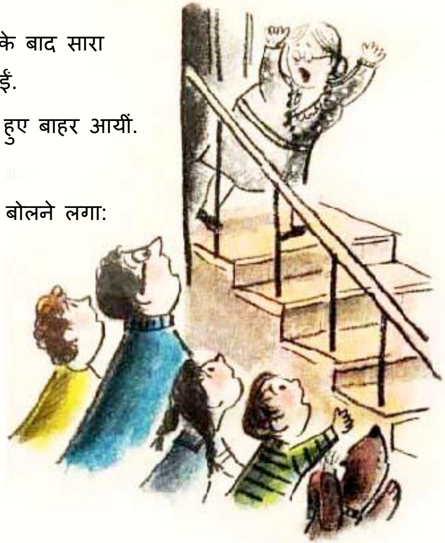
वो तुरंत चिल्लाते हुए बाहर आयीं.

"टिली उड़ गई!"

हर कोई एक-साथ बोलने लगा:

"असंभव!" "नहीं!"

"वो कब गई?"





आख़िरकार, पिताजी ने कहा, "चिंता मत करो. हम उसे ढूंढ लेंगे."

फिर आंटी सारा को छोड़कर पूरा परिवार टिली की तलाश में निकल पड़ा. आंटी सारा खोजने के लिए बहुत परेशान थीं. वो रोने लगीं. बेन्जी उन्हें देख रहा था. शुरू में वो बहुत खुश था कि टिली चली गई थी - लेकिन अब वो खुद दुखी था. अब बेन्जी, टीली को वापस लाना चाहता था.





शायद वो वापस आ गयी हो. बेन्जी मेपल के पेड़ की ओर भागा, लेकिन टिली वहां नहीं थी. उसने उसे हर जगह खोजा, लेकिन उसे टिली नहीं मिली. उसे बस कुछ गौरईए घर की छत के आसपास उड़ती हुई दिखाई दीं.




इस बीच परिवार ने टिली को पूरे शहर में खोजा, लेकिन वो कहीं नहीं मिली.

"देर हो रही है," पिताजी ने अंत में कहा.

"चलो घर चलते हैं. हम आज रात अखबार में एक विज्ञापन देंगे. कल हम जल्दी निकलेंगे और बेन्जी को अपने साथ लेकर चलेंगे."



अगली सुबह जब सब लोग नाश्ता कर रहे थे,

बेन्जी गुस्से से भौंकते हुए अंदर भागा. "बंद करो, बेन्जी," मां ने कहा.

"भौंकने से तुम आंटी सारा को टिली की याद दिलाओगे."

लेकिन बेन्जी भौंकता रहा. फिर वो सीढ़ियों से ऊपर भागा.

"बच्चो, जाओ और देखो, वो क्या कर रहा है," पिताजी ने कहा.



बच्चे, बेंजी के पीछे भागे.

"पापा! मां!" उन्होंने अटारी से पुकारा. "जल्दी आओ!"

पिताजी, मैं और आंटी सारा सब घबरा गए.

बेन्जी खिड़की पर भौंक रहा था...

और ठीक बाहर टिली थी! वो अपनी चोंच में एक छोटी टहनी लेकर इधर-उधर उड़ रही थी.

"टिली," आंटी सारा चिल्लाईं. "तुम यहां क्या कर रही हो?"

लिंडा ने कहा, "वो एक गौरैया का घोंसला बनाने में मदद कर रही है."

"वसंत ऋतु में पक्षी यही करते हैं."



आंटी सारा ने कहा, "उसने पहले तो कभी ऐसा नहीं किया."

"टिली कृपया अंदर आओ." आंटी सारा ने कोशिश की. उन्होंने टिली को अंदर लाने की भरसक कोशिश की. उन्होंने सूरजमुखी के बीज, उबले अंडे, सेब आदि से उसे मनाने की कोशिश की. लेकिन उससे कोई फायदा नहीं हुआ. टिली ने कोई ध्यान नहीं दिया.



टिली और गौरैया और अधिक टहनियां और डोरी के टुकड़े लाते रहे. मुंडेर के नीचे अब एक बड़ा सा घोंसला था. "हमें अग्निशमन विभाग से टिली को पकड़ने के लिए कहना होगा," पिताजी ने कहा. अपने उत्साह में किसी ने ध्यान नहीं दिया कि बेन्जी गायब हो गया था.




एक घंटे बाद फोन आया.

वो पालतू जानवरों की दुकान के मालिक मिस्टर जोन्स थे.

"आपका छोटा कुत्ता यहां पर है," उन्होंने कहा, "और वो घर जाने को बिल्कुल तैयार नहीं है."

"मैं बच्चों को उसे लाने के लिए भेजता हूं," पिताजी ने कहा.

जब लिंडा और जिमी पालतू जानवर की दुकान में पहुंचे तो वहां बेन्जी एक तोते को घूर रहा था. "मुझे पता नहीं," मिस्टर जोन्स ने कहा, "लेकिन वो तब से स्पार्की को घूर रहा है. ऐसा लगता है कि वो उस तोते को चाहता हो."




जिमी ने कहा, "लगता है मैं जानता हूं कि बेन्जी उसे क्यों चाहता है."

लिंडा ने कहा, "मैं भी."

"कृपया. मिस्टर जोन्स, हमें स्पार्की को घर ले जाने दें."



इसी बीच अग्निशमन विभाग का सीढ़ी वाला ट्रक आ गया. सीढ़ी को अटारी की खिड़की तक उठाया जा रहा था.



एक फायरमैन जाल लेकर ऊपर चढ़ा. "देखो, टिली! देखो, टिली!" वो चिल्लाया. बड़े लोग उत्सुकता से देखते रहे. किसी ने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि बच्चे बेन्जी और स्पार्की के साथ वापस आ गए थे.

टिली के अलावा वहां और कोई नहीं था. छत से टिली, स्पार्की के पिंजरे की ओर उड़ी, और फिर वो उसके सामने आकर बैठ गई. उसने उसे सहलाया. वो पहली नजर में होनेवाला प्यार था!



लिंडा ने पिंजरे का दरवाज़ा खोला और टिली सीधे अंदर चली गई.

"देखो, टिली अकेला महसूस कर रही थी," आंटी सारा ने कहा.

"मैंने इसके बारे में कभी सोचा तक नहीं था. बच्चों, तुम कितने अद्भुत निकले! तुम टिली के लिए एक दोस्त लेकर आए!"



जिमी ने कहा, "वो बेन्जी का विचार था." फिर सभी लोग एक साथ बातें करने लगे:

“वो कितना चतुर है!” “वो एक असली पक्षी कुत्ता!” “लगभग इंसान जैसा!”

बेन्जी बस अपनी पूंछ हिलाते हुए वहीं खड़ा रहा.




अगले वसंत जब चाची सारा मिलने आईं तो वो अकेली आईं.

"मैं टिली और स्पार्की को एक पक्षी रखवाले के पास छोड़ आई हूं," उन्होंने कहा.

"वे दोनों एक-साथ बहुत खुश हैं."



"देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लाई हूं." वो आगे बढ़ीं और उन्होंने एक तस्वीर निकाली.

"चित्र में टिली एक अंडे पर बैठी थी!"

"इसे बेन्जी को भी दिखाओ." जिमी ने कहा.

"बिल्कुल," आंटी सारा ने कहा. "क्योंकि, बेन्जी ने ही यह सब शुरू किया था."




इस बार बेन्जी को आंटी सारा की यात्रा में बहुत आनंद आया.

आंटी उसे हर दिन सैर पर ले जाती थीं और कसाई की दुकान से हमेशा उसके लिए कुछ विशेष नाश्ता खरीदती थीं.

और तब से, बेन्जी आंटी सारा का पसंदीदा कुत्ता बन गया, और सारा आंटी, बेन्जी की पसंदीदा आंटी बन गईं.